विद्यालय के कार्यक्रम में अतिथियों ने पुष्प अर्पित कर डॉ.भीमराव आंबेडकर को किया याद

पटनाः-मुजफ्फरपुर जिले के मुशहरी प्रखंड के कन्हौली स्थित राम जानकी मध्य विद्यालय में संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती बड़े ही हर्षोउल्लास से मनाई गई।विद्यालय के मैदान में आयोजित कार्यक्रम में शहर के उपमेयर डॉ.मोनालिसा,पूर्व विधायक केदारनाथ प्रसाद,डॉ.नवीन कुमार,सचिव किरण देवी,वार्ड पार्षद मो.हसन समेत कई अतिथि उपस्थित हुए।कार्यक्रम की शुरुआत डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के चित्रपट पर पुष्प माला अर्पित कर हुआ।वही उनके बताए गए विचारों को मानने का संकल्प सभी अतिथि व विद्यालय के विद्यार्थी ने लिया।कार्यक्रम के अपने उद्घाटन भाषण में उपमेयर डॉ.मोनालिसा ने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी को याद करते हुए कहा कि जैसे 'नीले आसमान के लिए सब मानव,जीव-जंतु बराबर है वैसे ही बाबासाहेब के लिए सब मानव बराबर थे।सब के लिए समान अवसर बराबर आजादी चाहते थे।पूर्व विधायक केदारनाथ प्रसाद ने कहा कि डॉ.अंबेडकर के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे न केवल संविधान के शिल्पकार थे।बल्कि एक प्रेरणादायी विचारक उत्कृष्ट शिक्षाविद् और सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर भी थे।वार्ड पार्षद मो.हसन ने कहा पढ़ने के शौकीन, डॉ. अंबेडकर शिक्षा को निरक्षरता,अज्ञान और अंधविश्वास से सामाजिक रूप से पिछड़ों की मुक्ति का साधन मानते थे।उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के शैक्षिक हितों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1945 में जन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की।डॉ.अंबेडकर ने लैंगिक समानता के लिए भी संघर्ष किया तथा उन्होंने उत्तराधिकार और विवाह में महिलाओं के समान अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।इस दौरान सचिव किरण देवी ने कहा कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर भारत के संबिधान निर्माता थे।जिनका आज यानी 14 अप्रैल को जन्म हुआ था।जिन्होंने विशेष परिस्थितियों में अपनी पढ़ाई को पूरा कर भारत के संविधान को बनाया और उस समय देश मे व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ एक आंदोलन के रूप अभियान चलाया।उन्होंने ऊंच नीच के भेदभाव को मिटाया और सभी को समान अधिकार दिलाया।वहीं भारत के संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के जीवन से बच्चों को शिक्षा लेने की बात कही।विद्यालय के प्रिंसिपल ने कार्यक्रम में आए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।वही कार्यक्रम का संचालन शिक्षक मो.शाहिद ने की।कार्यक्रम के अंतिम में अतिथियों के द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच कॉपी, पेंसिल, पेन, कटर, रबर इत्यादि का वितरण किया गया। इस मौके पर बिभा कुमारी,रेणु बाला,अनिकेत कुमार,प्रिया कुमारी,मो.शाहिद,गोविंद ठाकुर,प्रतिमा कुमारी,अभिरुचित कुमार,अर्जुन कुमार,कविता कुमारी इत्यादि सहित अन्य शिक्षक एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

गोण्डा के कवि यमराज मित्र सुधीर श्रीवास्तव को जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी' साहित्य सम्मान

गोण्डा (उत्तर प्रदेश): जिले के वरिष्ठ कवि साहित्यकार देहदानी यमराज मित्र सुधीर श्रीवास्तव को 'जनार्दन पाण्डेय अनुरागी 'में सम्मान से सम्मानित किया गया है। पड़रौना (कुशीनगर) में निराला शब्द संवाद मंच पडरौना कुशीनगर और हिन्दी साहित्य भारती गोरक्ष प्रान्त गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में उदित नारायण इण्टरमीडिएट कालेज के सभागार में 12 अप्रैल को आयोजित वार्षिक समारोह में जहां देश विदेश के साहित्यकारों पत्रकारों के साथ सुधीर श्रीवास्तव को उक्त सम्मान, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, मोमेंटो, डायरी, पेन, पैड देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित आचार्य कुल के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य धर्मेंद्र, दोनों संस्थाओं के अलावा विभिन्न साहित्यिक मंचों के संस्थापकों/पदाधिकारियों के अलावा देश/विदेश के सैंकड़ों कवियों, साहित्यिक मनीषियों, पत्रकारों के साथ सुधाकर तिवारी, ओम प्रकाश द्विवेदी 'ओम', रायबरेली काव्य रस साहित्य मंच के संस्थापक डा. शिव नाथ सिंह शिव, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. इंद्रेश भदौरिया, ईश्वर चंद्र जायसवाल विद्या वाचस्पति, पार्वती देवी गौरा, सार्जेंट अभिमन्यु पाण्डेय, अभय श्रीवास्तव , वंदना सूर्यवंशी, दि ग्राम टूडे प्रकाशन समूह के संपादक डा. शिवेश्वर दत्त पाण्डेय, सिद्धि नाथ शर्मा, अखंड गहमरी, प्रार्थना राय, क्षमा श्रीवास्तव, गीता पाण्डेय 'अपराजिता', इंद्रजीत तिवारी 'निर्भीक, नंदलाल मणि त्रिपाठी 'पीतांबर' राम लखन वर्मा सहित सैकड़ों अन्याय मनीषी उपस्थित रहे। ज्ञातव्य है कि श्री श्रीवास्तव वर्तमान में पक्षाघात का दंश झेलते हुए भी साहित्यिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके बहुआयामी व्यक्तित्व, बेबाक, सर्वसुलभ, सर्वहितैषी व्यक्तित्व के धनी नवोदित रचनाकारों के लिए सारथी की भूमिका निभाने वाले सुधीर श्रीवास्तव जी विभिन्न राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पटलों/मंचों से सम्मान पत्र प्राप्त कर चुके श्री श्रीवास्तव विभिन्न साहित्यिक पटलों में पदाधिकारी भी हैं। आपकी अब तक पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'विद्या वाचस्पति' एवं विद्यासागर' मानद सम्मान प्राप्त कर चुके और बुलंदी विश्व रिकॉर्ड कवि सम्मेलन में प्रतिभाग कर 'काव्यश्री', अखंड काव्यार्चन गोल्डेन बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड, ऐतिहासिक अमृत महोत्सव काव्य गोष्ठी के लिए 'गौरव सम्मान', 'कोच काव्य कुंभ 2021', जय विजय सम्मान 2021, संगम शिरोमणि आदि से सम्मानित श्री सुधीर श्रीवास्तव नेत्रदान का संकल्प और देहदान की सार्वजनिक घोषणा कर चुके हैं। नवोदित रचनाकारों को यथासंभव प्रेरित कर सहयोग/मार्गदर्शन देते हुए आगे बढ़ाने का भी हर संभव प्रयास करते हुए प्रेरक , गाडफादर, सारथी की भूमिका लगातार निभा रहे हैं श्री सुधीर श्रीवास्तव के सम्मानित किए जाने पर आचार्य धर्मेंद्र सहित अनेक साहित्यिक सामाजिक विभूतियों, शुभचिंतकों ने बधाइयाँ और शुभकामनाएं देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है।

जीवन की धूल फांकने से बनता है लेखक – ममता कालिया

हिन्दू कॉलेज में लेखक से भेंट आयोजन

दिल्ली। जीवन में जो जितने अधिक धक्के खाता है, उतना ही अधिक और बेहतर लिख सकता है। जिसका जीवन गमले के पौधे के समान व्यतीत होता है, उसके पास लिखने को बहुत कम होता है तथा ऐसा व्यक्ति केवल अपने अंतर्मन की बातें ही लिख पाता है। साहित्य अकादेमी से सम्मानित प्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया ने हिन्दू कालेज में हिंदी विभाग के वार्षिकोत्सव 'अभिधा 2026' में कहा कि पहले पिता की नौकरी के स्थानांतरण एवं फिर पढ़ाई के कारण उन्होंने अनेक शहरों की धूल खाई, हवा देखी, पानी पिया, स्वाद चखा, भाषाएँ बोलीं, जिन्होंने उनके लेखन क्रम में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी चर्चित पुस्तकों कितने शहरों में कितनी बार तथा जीते जी इलाहाबाद की रचना प्रक्रिया के सूत्र बताते हुए कहा कि अपने जीवनानुभवों के साथ अपने परिवेश और आसपास के सामान्य जीवन को बारीकी से देखते हुए इनका सृजन हुआ है। कालिया ने युवाओं को अज्ञेय की मानक भाषा, जिसमें तत्सम शब्दों के साथ तर्क एवं अर्थ दोनों जीवन में खोल देते हैं, का अध्ययन करने को कहा। लेखन के लिए उन्होंने अनुभव, अनुभूति एवं कल्पना का सहारा लेने पर बल दिया। डायरी लेखन को लेखन की ओर आसानी से बढ़ने का साधन बताया क्योंकि डायरी में कभी-कभी ऐसे सुबोध वाक्य लिख जाते हैं जो आगे चलकर बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। पुरानी डायरी पढ़ने पर उसमें अनेक नगीने मिलते हैं।'लेखक से भेंट' शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम में ममता जी ने अपने लेखन सफर का प्रारंभिक विवरण भी साझा किया और बताया कि उन्होंने सर्वप्रथम 1955 में बच्चों की कहानियों से लेखन आरंभ किया। उसके पश्चात् अजमेर से छपने वाली प्रसिद्ध पत्रिक लहर को याद किया जिसके सम्पादक प्रकाश जैन ने उनकी कविताएँ लगातार छापी थीं। विद्यार्थी जीवन की शरारतों को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि शरारतों से ही कहीं लेखन निकलता है। उन्होंने कहा कि लेखन में सबसे पहले एक केंद्रीय चरित्र खड़ा किया जाता है, जिसमें वे सभी बातें डाल दी जाती हैं जो लेखक को खटकीं या अच्छी लगीं।

हिंदू कॉलेज आने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने यहाँ व्यतीत अपने विद्यार्थी जीवन की यादें भी

साझा कीं। ममता जी ने हिंदी की प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी एवं उनके पति राजेंद्र यादव, जो हिंदी के विख्यात लेखक एवं संपादक थे, के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाने के दिनों को भी स्मरण किया। कालिया ने श्रोताओं के विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए और उन्हें खूब पढ़ने की सलाह दी। इससे पहले हिंदी विभाग के प्रभारी प्रो बिमलेन्दु तीर्थंकर ने शाल ओढ़ाकर ममता जी का स्वागत किया एवं हिंदी साहित्य सभा तथा अभिधा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक शताब्दी से भी अधिक समय से हिंदी साहित्य सभा अपनी गतिविधियों से नयी पीढ़ी में साहित्य के संस्कार दे रही है। विभाग के शिक्षक डॉ पल्लव ने ममता कालिया का परिचय देते हुए कहा कि उनके लेखन की मुख्य विशेषता यह है कि वे भारतीय मध्यवर्ग के सामान्य जनजीवन को अत्यंत कुशलता से अपने लेखन में चित्रित करती हैं। वे किसी विचारधारा या वाद से आक्रान्त होकर नहीं लिखतीं बल्कि खांटी जीवनानुभवों को प्रगतिशील दृष्टि से लेखन में जगह देती हैं। डॉ पल्लव ने कहा कि शहरनामा जैसी विधा को हिंदी में खड़ा करने में ममता जी का नाम लिया आजाएगा। शहर आधारित उनकी कृतियों का उल्लेख कर डॉ पल्लव ने कहा कि इनमें वे स्मृतियों की पुनर्रचना ही नहीं कर रही थीं बल्कि कोई चाहे तो इसे भी संस्मरण की ही कृति मान सकता है लेकिन यहाँ ममता जी का जोर उस शहर के चरित्र को ध्यान में रखकर अपने अनुभव लिखने पर रहा। 'जीते जी इलाहाबाद' इस रचना श्रृंखला की उच्चतम परिणति है जहाँ इलाहाबाद जैसे सांस्कृतिक शहर के चरित्र को लिखते हुए इसके भीतर वे अपने और अपने प्रियजनों के व्यक्तित्व की तलाश भी करती हैं। हिंदी में इस तरह की कृतियां बहुत अधिक नहीं मिलतीं और नयी शताब्दी में साहित्य की विधाओं में आ रहे बदलावों तथा अन्तर्क्रियाओं का भी श्रेष्ठ उदाहरण ममता जी का कथेतर लेखन बन गया है।

आयोजन के दूसरे भाग में अभिधा के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार ममता कालिया के हाथों दिए गए। इनमें आशु भाषण में प्रथम रामजस कॉलेज की आकृति महाजन, द्वितीय श्री वेंकटेश्वर कॉलेज के पुलकित भार्गव और तृतीय रामजस कॉलेज के आदित्य राज को प्रमाण पत्र व नगद राशि दी गई। काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम लेडी श्रीराम कॉलेज की कृष्णा पाठक, द्वितीय दिल्ली स्कूल ऑफ़ जर्नलिज्म के अंकित तथा तृतीय दौलत राम कॉलेज की प्रत्यक्षा शर्मा को पुरस्कार दिए गए।

इससे पहले ममता जी ने हिंदी विभाग की भित्ति पत्रिका अभिव्यक्ति के नए अंक का लोकार्पण भी किया। वे उस कक्षा कक्ष में भी गईं जहाँ उन्होंने अपनी पढ़ाई के दिनों में कक्षाएँ ली थीं।

अंत में आभार प्रदर्शित करते हुए विभाग की वरिष्ठ शिक्षिका प्रो रचना सिंह ने कहा कि ममता कालिया जैसे उदार और सरल साहित्यकारों का सान्निध्य नयी पीढ़ी को हमारी कला संस्कृति के अधिक निकट ले जाने में समर्थ होगा। कार्क्रम का संयोजन बृजलाला और दीक्षा शर्मा ने किया। आयोजन में प्रसिद्ध मीडिया विशेषज्ञ डॉ वर्तिका नंदा साहित्य हिन्दू कालेज में राजनीति विभाग की प्रो सीमा दास, दर्शन शास्त्र के डॉ शुभम ओझा, हिंदी विभाग की डॉ नीलम सिंह, डॉ प्रज्ञा त्रिवेदी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी और शोधार्थी उपस्थित रहे।

कैलाश सिंह राजपुरोहित
संयोजक, हिन्दी साहित्य सभा
हिन्दू कॉलेज, दिल्ली

चिकित्सा और कोरपोरेट लूट

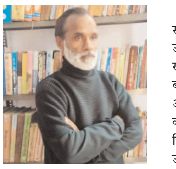

चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से भयंकर से भयंकर बिमारियों की चिकित्सा की सुविधाएं खोजी जा रही हैं। हृदयाघात, हृदय प्रत्यारोपण,स्टंट लगाना,गूर्दा प्रत्यारोपण,केश प्रत्यारोपण,कैंसर, मधुमेह, तपेदिक, अल्सर, यकृत सूजन, टैस्ट ट्यूब बेबी, मस्तिष्क विकार,घुटना प्रत्यारोपण,नकली दांत,आरसीटी, माइग्रेन,मृगी, गर्भाशय के रोग, विभिन्न प्रकार की पत्थरी निकालने,

लिंग परिवर्तन तथा विभिन्न प्रकार की चीरफाड़ से लाईलाज बिमारियों की अचूक चिकित्सा करने के दावे किये जा रहे हैं। सन् 2024 में जापानी चिकित्सकों ने नये दांत उगाने का दावा किया है। उनके अनुसार 2030 तक यह चिकित्सा संभव हो जायेगी। प्रारंभ में एक दांत उगाने पर 8-10 लाख रुपए का खर्च आयेगा।इस संबंध में पहली बात तो यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि बहुत महंगी होने के कारण इस प्रकार की अचूक चिकित्सा आज भी जनसाधारण को उपलब्ध नहीं है। महंगी चिकित्सा करवाने की अपेक्षा जनसाधारण तो मौत को ही वरण करेगा। मूलभूत सुविधाओं नून, मिर्च,तेल,आटे, कपड़े,आवास का तो जुगाड हो नहीं पाता है।वह इतनी महंगी चिकित्सा कैसे करवायेगा? दूसरी बात यह ध्यान में रखें कि इस प्रकार की आधुनिक चमत्कारी चिकित्सा बहुराष्ट्रीय कंपनियों, चिकित्सक लाबी,दवा लाबी और चिकित्सा उपकरण निर्माता लाबी के व्यापार का हिस्सा है।इनको किसी बिमार व्यक्ति की चिकित्सा या सेवा से कोई लेना-देना नहीं है। पांच पैसे की गोली पचास रुपए में,सौ रुपए की वैक्सीन 5000 रुपये में,5000 रुपये का स्टंट दो लाख रुपये में,एक दांत का प्रत्यारोपण 2000-50000 रुपये में करना आदि आदि क्या कह रहा है? निजी हस्पतालों ने जो लूट मचा रखी है - उसे सरेआम डकैती कह सकते हैं।इन निजी संस्थानों को लाभ पहुंचाने के लिये सरकारी हस्पतालों में दवाईयों, चिकित्सकों, भवनों का बुरा हाल किया हुआ है। तीसरा यह कि शरीर की चिकित्सा करने के लिये सब कुछ किया जा रहा है लेकिन प्राण,मन और मानसिकता,बुद्धि और विचारधारा, भावनात्मक स्तर तथा आत्मिक स्तर पर कोई काम नहीं हो रहा है। मनुष्य केवल शरीर नहीं है। मनुष्य शरीर के साथ प्राण,मन, बुद्धि, भावना और आत्मा भी होता है। केवल शरीर और शारीरिक स्तर पर होने वाली बिमारियों की चमत्कारी चिकित्सा करने से विकास नहीं होता है।इस एकतरफा विकास ने मनुष्य को राक्षस बना दिया है।वह शक्ति, पैसे और सत्ता के पीछे भागने में लगा हुआ है।पूरा इस्लामी खाड़ी संसार तथा पूरा युरोप और अमरीका पागलों की तरह युद्ध,युद्धोन्माद, हिंसा, नरसंहार, मारामारी, लूटपाट और विध्वंसक हथियारों के निर्माण में लगा हुआ है। इनकी चिकित्सा के लिये हमारे दार्शनिकों, विचारकों, सुधारकों,वैज्ञानिकों, चिकित्सकों,मनोविदों, तथाकथित योगाचार्यों, धर्माचार्यों, कथाकारों, मौलवियों, पादरियों, ग्रंथियों, भिक्षुओं, मुनियों ने क्या किया है? इनमें से अधिकांश लोग शक्ति,सत्ता,धन, प्रसिद्धि, पुरस्कार और अय्याशी को प्राप्त करने में लगे हुये हैं। धरती की 800 करोड़ की आबादी में ऐसे लोगों की संख्या दो-चार करोड़ ही होगी, जिन्होंने इस धरती की अधिकांश सुख -सुविधाओं, शक्ति,सत्ता,साधनों, पदों, पुरस्कारों और धन -दौलत पर कब्जा किया हुआ है। बाकी बचा अधिकांश जनमानस उपरोक्त दो चार करोड़ लोगों की अंधभक्ति, चापलूसी और गुलामी करने में लगा हुआ है। और ध्यान रहे अंधभक्त आधुनिक विश्व के लिये सबसे बड़ा खतरा हैं।

शीलकराम आचार्य
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
बनारस

स्वस्थ तन-स्वस्थ मन : सफलता की असली पूंजी

मानो या न मानो, इस संसार में आपकी असली पहचान आपकी स्किल से बनती है। ईर्ष्या करने वाले लोग हमेशा ईर्ष्या ही करते रह जाते हैं, लेकिन जो व्यक्ति अपनी क्षमता को पहचानकर उस पर निरंतर मेहनत करता है, वही सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचता है। अक्सर हम अपनी ही खूबियों को नहीं पहचान पाते, परंतु ईश्वर समय-समय पर ऐसे अवसर प्रदान करता है कि हम अनायास ही उसी मार्ग पर चल पड़ते हैं, जो हमारे लिए निर्धारित होता है। तब हमें भीतर से यह अनुभव होता है कि यही कार्य हमारे लिए बना है, पर हम उसे पहचान नहीं पा रहे थे।

वास्तव में, जिस कार्य को करने में आनंद आए, जिसमें थकान का अनुभव न हो और दिनभर करने के बाद भी मन प्रसन्न रहे, वही हमारी सच्ची स्किल है। इसी संदर्भ में यह पंक्ति अत्यंत सार्थक है– 'प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती '। यह कोई साधारण वाक्य नहीं, बल्कि गहरे अर्थों से भरा हुआ है। इसका आशय यह है कि सच्ची प्रतिभा को किसी सिफारिश, दिखावे या बाहरी सहारे की आवश्यकता नहीं होती; वह अपने आप अपना मार्ग बना लेती है। आवश्यकता केवल उसे पहचानने और निखारने की होती है।

इस जीवन में आगे बढ़ने के लिए केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मानसिक रूप से स्वस्थ होना भी उतना ही आवश्यक है। तन से स्वस्थ होना आवश्यक है क्योंकि यही हमारी कार्यक्षमता का आधार है, लेकिन यदि मन स्वस्थ नहीं है, तो व्यक्ति अपनी ऊर्जा को सही दिशा में नहीं लगा पाता। आज के समय में अनेक लोग मन में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और चिड़चिड़ापन पालकर रखते हैं। ऐसे भाव न केवल उनके मन को अशांत करते हैं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता और ऊर्जा पर भी नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। परिणामस्वरूप वे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं।

कई लोग केवल दूसरों से जलन रखने और उनकी निंदा करने में ही लगे रहते हैं। वे स्वयं के विकास पर ध्यान नहीं देते और नकारात्मक सोच में उलझे रहते हैं। ऐसे लोगों को वास्तव में मानसिक रूप से अस्वस्थ कहा जा सकता है, क्योंकि उनका मन शांत और संतुलित नहीं होता। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपने कार्य में तल्लीन रहता है, सुकूनपूर्वक कार्य करता है और सकारात्मक सोच रखता है, वही वास्तविक अर्थों में स्वस्थ होता है।

मन में सुकून और शांति तभी आती है, जब आप अपने मनपसंद कार्य को पूरी तन्मयता और संतुलन के साथ करते हैं। जब कार्य आपके मन का होता है, तब उसमें थकान नहीं, बल्कि आनंद की अनुभूति होती है। यही वह स्थिति है, जहां व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान और उद्देश्य को समझ पाता है। संभव है कि आप उसी कार्य के लिए इस संसार में आए हों।

अतः यह स्पष्ट है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए तन और मन दोनों से स्वस्थ होना अनिवार्य है। जो लोग किसी खेल, योग या अन्य सकारात्मक गतिविधियों में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं, वह इस बात का प्रमाण है कि वे शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से स्वस्थ हैं। यही स्वास्थ्य उनकी सफलता की आधारशिला है।

अंततः, हमें चाहिए कि हम अपनी स्किल को पहचानें, उसे निरंतर निखारें, नकारात्मक भावनाओं से दूर रहें और अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ बनाए रखें। जब यह संतुलन स्थापित हो जाता है, तब सफलता अपने आप आपके कदम चूमती है और जीवन सार्थक बन जाता है।

डॉ. मंगलेश जायसवाल
(कालापीपल)
व्याख्याता, डाइट सीहोर
9926034568

एम.ए. हिंदी साहित्य की परीक्षा का परिणाम आया

हिंदी साहित्य से स्नातकोत्तर करने ,प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के साथ विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान पर आने का आनंद मिश्रित गर्व था।मैं साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहता था।उस समय तक साहित्य व साहित्यकारों के प्रति आमजन में सम्मान का भाव बना हुआ था।मंचीय कवियों को भी फिल्मी हीरो की तरह मान मिलता था।प्रो. सत्यव्रत अवस्थी जी शोध करने का निर्देश दे गये थे।मैंने भी शोध कार्य करने की ठान ली।उस समय महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ.परशुराम शुक्ल विरही थे उनके पास पहले से पांच छात्र जुड़े थे और उससे अधिक छात्र होना विश्वविद्यालय के नियमों के विरुद्ध था।दूसरे वरिष्ठ प्राध्यापक स्वयं पी.एच.डी.न होने से निदेशक होने के अपात्र थे।इसलिए मैंने डॉ बी.एन.सिंह से बात की।उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और शोध की रूपरेखा बनाने को कहा।बाद में मेरे प्रारूप–नई गजल स्वरूप एवं संवेदना पर स्वयं रुचि लेकर उसे अंतिम रूप दिया।परीक्षा परिणाम की मैं तो जैसे प्रतीक्षा कर रहा था।मैंने तुरंत 15 जुलाई 1988 को अपने शोध कार्य की रूपरेखा ग्वालियर जाकर जीवाजी विश्वविद्यालय में जमा की ताकि आर.डी.सी.की अगली बैठक में आ सके।मौखिक साक्षात्कार के दिन विश्वविद्यालय पहुंचा तो ज्ञात हुआ कि प्रोफेसर सत्यव्रत अवस्थी डीन होने के नाते साक्षात्कार में साथ में बैठेंगे और बाहर से आये आचार्य साक्षात्कार लेंगे। अपनी बारी आने पर मैं अंदर गया और पूछे गये प्रश्नों के सावधानीपूर्वक उत्तर दिए कि क्यों हिंदी साहित्य में इस समय गजल पर शोध कार्य होना चाहिए।उस समय अवस्थी जी ने अपना शिष्य व विषय के प्रति मेरी रुचि व जुड़ाव को जानकर विषय का समर्थन किया।बाद में ज्ञात हुआ कि 23 शोध इच्छुक छात्रों में से केवल 7 के शीर्षक स्वीकृत हुए हैं जिनमें से एक खुशनसीब मैं था।शेष बारह छात्रों के शीर्षक बदल दिए गए थे और कुछ को पुन: नई शोध रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया गया।जिनके शीर्षक बदले गए उनमें एक यहीं के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के हिंदी के व्याख्याता थे।उनका विषय बदलकर तुलसी की मानस में कूट काव्य रचना कर दिया गया था।जिस दिन विश्वविद्यालय से पत्र द्वारा शोध कार्य के शीर्षक की स्वीकृति की सूचना प्राप्त हुई ,मैं महाविद्यालय में गया तो ज्ञात हुआ कि प्रदेश में ठाकुर मुख्यमंत्री होने के बाद भी एक ठाकुर प्राध्यापक को यहां से हटाकर गंजबासौदा स्थानांतरण कर दिया गया है और वह ठाकुर प्राध्यापक और कोई नहीं उसके शोध निदेशक डॉ बी.एन. सिंह थे।कारण राजनीतिक थे किसी अन्य के लिए पद रिक्त करने हेतु उन्हें यहां से हटाया जाना जरूरी हो गया था।उन्होंने अपने स्तर पर कुछ दिन स्थानांतरण निरस्त कराने के प्रयास किए किंतु हार कर रिलीव हो गए।बाद में इस आदेश के पीछे की कहानी में ज्ञात हुआ कि उनके स्थान पर जो देवी आई थी उनके पतिदेव सत्तारूढ़ दल से जुड़े थे और उन्हीं के प्रयासों से यह स्थानांतरण हुआ है।बाद में चर्चा में सुना कि किसी ने पदस्थ मुख्यमंत्री के सचिव को प्रधानमंत्री कार्यालय से उनके निजी सचिव के नाम से एक फोन कर आदेश दिया था कि उनका स्थानांतरण यहां से वहां 2 दिन के भीतर होना है।कैसे होना है ये आप जानें।सचिव महोदय जब तक कुछ समझते फोन कट चुका था।तब मोबाइल नहीं थे और नंबर दिल्ली का था।अब उनकी इतनी हिम्मत नहीं थी कि प्रधानमंत्री सचिवालय में फोन लगाकर सत्यता की जांच पड़ताल करते।फलत: शोध कार्य का शीर्षक स्वीकृत होने के बाद मैं कभी अपने शोध निदेशक के साथ ठीक ढंग से बैठ भी नहीं सका।विषय की जानकारी और गद्य लेखन के अभ्यास के लिए मैंने गजलें लिखना छोड़कर गजल पर लेख लिखना शुरु कर दिया।अधिकांश लेख शोध लेख व समीक्षा के रूप में प्रकाशित भी होने लगे।गजल या नई गजल शीर्षक लेख दैनिक आचरण में 15.1.89 को ,नई गजल अंकन एवं प्रचलन नव प्रभात में 15.06.1989 को ,नई गजल के आलोक स्तंभ : कुंअर बेचैन आचरण के रविवारीय अंक में 2 .7.89 को, नईगजल के प्रतिनिधि कवि– अशोक निर्मल नवप्रभात में 24.09.89 को नई गजल के प्रवर्तक दुष्यंत 1.10.89 आचरण में प्रकाशित हुए! सामान्यत: दुष्यंत कुमार त्यागी को प्रगतिशील विचारधारा का जनवादी गजलकार ही स्वीकार किया गया है लेकिन मैंने 'रूमानी साये में दुष्यन्त' शीर्षक से लेख लिखा जो नवप्रभात ग्वालियर में 22 अप्रैल 1989 को प्रकाशित हुआ।इसकी व्यापक चर्चा हुई।इसमें दुष्यन्त की बहुत सी गजलों और शेरों को उदाहरण सहित प्रस्तुत कर सिद्ध किया गया था कि दुष्यन्त में शायरी में रूमानियत का अभाव नहीं है और वह मूलत: रूमानी शायर हैं।नवें दशक के विराट गजलकार 'विराट' चन्द्रसेन विराट पर लिखा जो 7/1/90 को आचरण के रविवारीय परिशिष्ट में प्रकाशित हुआ।जून 1990 को राजगोपाल सिंह दिल्ली पर नई गजल के प्रतिनिधि कवि–राजगोपाल सिंह प्रकशित हुआ।इससे मेरी छवि राष्ट्रीय स्तर पर गजल समीक्षक और आलोचक की भी बनने लगी।उस समय हिंदी में कोई उल्लेखनीय गजल समीक्षक था भी नहीं।गद्य लेखन का अभ्यास भी बना रहा और शोधकार्य भी गतिमान रहा।नवप्रभात में प्रकाशित गजल, हिन्दी गजल और नई गजल लेख भी बहुत चर्चित हुआ।इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों के लिए विषय से हटकर भी कुछ लेख लिखे इनमें से कुछ धार्मिक और सामाजिक भी थे।इससे मेरी शोध दृष्टि औश्र भाषा शैली में सुधार हुआ,इसमें दो मत नहीं।इसका लाभ मुझे शोध प्रबंध में हुआ।डॉ. बी.एन.सिंह गंज बासौदा चले गये थे।वह जब भी पिछोर आते या पिछोर से जाते शिवपुरी रुककर मेरे लिखे अध्याय ले जाते और टिप्पणी कर वापिस दे जाते।तीन बार ऐसा हुआ और उन्होंने कहा कि वर्तनी का ध्यान रखो बाकी तुम अच्छा लिख रहे हो तुम तो टाइप कराना शुरू कर दो।उनकी रुचि शायद इसजिए भी थी क्योंकि मैं उनके अध्यापकीय जीवन का पहला और आखिरी शोध छात्र था।

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल
शिवपुरी म.प्र. मो.9425766485
ई-मेल
mkagrwal@yahoo.com